१०१पु ८८

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४९०१-८९ (५५०)

ग्रंथ नाम भारत

विषय कथा पुराणे.

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

1

अथ विराटप[illegible] ॥ श्रीरामचंद्रसमर्थ ।

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(2)

॥श्रीगणेशाय नमः॥श्रीसरस्वत्यै नमः॥श्रीगुरुभ्यो नमः॥जो
देव बोलिजे श्रेष्ठि॥ विसुनि मायादेवि आपाटि॥ ब्रह्मा विष्णु महे
श्वर पोटि॥ जन्मविलि बाळके॥१॥ कौतुके ठेउनिया नावे॥ रंजे वि
साकार तेथ्या नावे॥ अमल[illegible]व नावे॥ थापटुनिया पहुडवि॥ २॥
तया आदिपुरुषा स्वामि॥ लि[illegible]वे नरगुरु नामि॥ नमस्कारु निमि
नो धर्मि॥ सावध ह्मणोनि श्रोते तया[illegible] आता चौथे विराटपर्व॥ नवरस
सुधेचा सुधार्णव॥ श्रवणोद्धियाचे तेनव॥ अलिजनिन्तव नवरदेव॥४॥
रत्नेरकोन शोके गगनि॥ रावन काठे व समुद्र जिवनि॥ विश्वनराचे
गंधसदनि॥ इषणा स्वान रिघेना॥५॥ मुळे अस्यके बोलतसि वचने तमच

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(3)

र अथर्वानेणतेपणे ॥ गुणग्राह्निकजिवेप्राणे ॥ प्रेमकरिति ग्रंथार्थि ॥ ६ ॥
प्रयागजान्हवि आनिरा ॥ कांचकुपिका नररुनि चतुरा ॥ कावडि नेत
तिरामेश्वरा ॥ अनिषेकार्थ आवडि ॥ ७ ॥ तेविं वेदाब्धिमथुनि देखा ॥
व्यासे काढिले अमृतोदका ॥ [illegible] राह्याच्या कुपिका ॥ नररुनि लो
कामजहाति ॥ ८ ॥ प्रसादपात्र [illegible] प्रति तो स्विकारुनि संतश्रोति
कर्णद्वारा परम नेत्कि ॥ हृदय [illegible] संचणे ॥ ९ ॥ द्वादशवर्षे आरण्य
वास ॥ सरलियानंतरे कुरुन [illegible] र्ये इष्टिगुण विशेष ॥ स्विचारावि
वरितो एका ॥ १० ॥ चौघ बंधु आणि द्रौपदि ॥ धौम्यविवेकाचा उदधि
त्यांते म्हणे विचार बुद्धि ॥ बुद्धिप्रदा मज होणे ॥ ११ ॥ नष्टचर्येअज्ञातवा

3A

स ॥ कवण ठाईं कर्मावे कैसे ॥ शत्रुसि कष्ठलिया विशेष ॥ महदुःस
नि पाडिति ॥ १२ ॥ जरि अज्ञ[illegible]दावे ॥ तरि बारा क्रमुनि तेर
वे ॥ ऐसे करिता आघवे ॥ आयु[illegible]यांतकि ॥ १३ ॥ धौम्य ह्मणे वि
चार सुमति ॥ कासया [illegible]वर्ति ॥ होणार ते प्रारब्ध यति
आपेआप होतसे ॥ १४ ॥ य[illegible]र विशेषी ॥ रुपे पालट तिआ
पेसि ॥ नाव पालटा विर्के [illegible] एकेकु रुवर्ये ॥ १५ ॥ कंकना
मे देविजे धर्मो ॥ बहुव[illegible]बळिया तिमा ॥ घेउनि अंगाने वि
शतिमा ॥ बृहन्नळा अर्जुन ॥ १६ ॥ ग्रंथिक नाम नकुळा ते ॥ तंतिपा
ळ सहदेवा ते ॥ सैरंध्रि हे द्रौपदि ते ॥ कृत्रिम नाम पाचारा ॥ १७ ॥

Rajawade Sanshodhan Mandal Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai

(५)

धर्मराजांचेघरि ॥ होतोनियोगअधिकारि ॥ ऐसेबोलोनिविराटन
गरि ॥ विराटातेसविसे ॥ १८ ॥ लोटलियाअज्ञातसंवत्सर ॥ पुढाक
रूआणाविचार ॥ राज्यप्राप्तिचाप्रकार ॥ असाध्यसाध्यजाणावा ॥ १९ ॥
ऐसेधौम्यअनुवादता ॥ परमआनंदेकुंतिसुता ॥ ब्राह्मणसंगि
आसमल्ला ॥ आज्ञादेउनेपाठवि[illegible] ॥ कोण्हिपांचाळदेशावस्ति
कोण्हिसप्तमपुरिप्रति ॥ श्री[illegible]सुदेवसंगति ॥ वर्षेयककर्मा
वे ॥ २१ ॥ कोण्हिधाडिलेहस्ति[illegible]पुरा ॥ खेदअल्हादकोरवेश्वरा ॥ आ
ज्ञातवासयुधिष्ठिरा ॥ कोठेकसेजाणावे ॥ २२ ॥ इंद्रसेनरथसहि
त ॥ सेवकसोयरेपरमआप्त ॥ द्वारकेधाडिलेकमलनाथ ॥ स्नेहभावे

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

५४

पाळितु ॥२३॥ द्रौपदि वियापरिचारिका ॥ सखी यावे स्त्रियाओने
का ॥ धृष्टद्युम्न देउनि देखा ॥ पाळिये त्यासुखवाते ॥२४॥ अग्नि
होत्र सामोग्रिसि ॥ धौम्य जा[illegible]ळासि ॥ नितिसांगे पांडवा
सि ॥ विराट संगि वसावया ॥ [illegible] नावरुपे थोरपणा ॥ कोण्हा हो
ने दावे ज्ञान ॥ दिनाहुनि परु[illegible] ॥ ऐसे लोकि दावावे ॥२६॥ दाउ
नि चातुर्य कुशळे तते ॥ मुर्[illegible] प्रभुते ॥ समर्थ बोलले ते नेघ
ऱ्हेते ॥ ते चिवशा[illegible] द्वित्रतिष्टा ॥२७॥ असत्य न बोलिजे सर्वथा ॥ ध
रिजे निर्मळ निर्लोभता ॥ इंद्रिय नेमे निश्चळता ॥ होय वल्लुन
रायाते ॥२८॥ राजा आचारे कार्य सांगे ॥ नकरवे ह्मणो निन होईजे

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(5)

मोग ॥ स्वभावदेखोनिजोवोग ॥ तोचिवल्लु नरायाते ॥ २९ ॥ मागास
रिजेअंतःपुरि ॥ पुढेहोईजेरणचत्वारि ॥ दिधल्लिआज्ञावेंदिसि
रि ॥ तोचिवल्लु नरायाते ॥ ३० ॥ किजेसवोसिअजेव ॥ कोंढनदी
खविजेवक्रनाव ॥ सर्वपात्निगोरव ॥ तोचिवल्लु नरायाते ॥ ३१ ॥
करणिकरनियालपवि ॥ [illegible]जियाचिवाउवि ॥ महायेश्री
विपदवि आपेआपपावतु ॥ ३२ ॥ राजस्त्रियेसिसंवाद ॥ पुत्रमि
त्रासिविनोद ॥ राजपुरोहित[illegible]वाद ॥ जाणानेपुरुषिनकरावा ॥ ३३ ॥
जाल्लियामानहोअपमान ॥ हर्षविषादिनघलिमन ॥ सेमासि
खेसुत्रसेन्न ॥ तोचिपावेमह्लिमैते ॥ ३४ ॥ रायेनेमिस्याआपा

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

5A

रि॥ सावधान अहोरात्रि॥ आळस निद्रा दवडुनि दुरि॥ तो विद
लु रायाते॥ ३५॥ प्रश्नु बोल विद्या बोलणे॥ प्रश्नु पुसिलते सांगणे
न पाचारिता नाहि जाणे॥ तो विपावे प्रतिष्ठा॥ ३६॥ राजे पसुंन्य नाय
ककानि॥ राजनी दान वंदे [illegible] राजमान्याते सन्मानि॥ तो विपा
वे महिमेते॥ ३७॥ राज्यास [illegible] वहनि॥ राजयाचे यकांत स
दनि॥ बैसका न करि तो स[illegible] मान पावे नृपाचा॥ ३८॥ आपु
ले प्रगटु नेणे ज्ञान॥ नेणे त्याते [illegible] अज्ञान॥ ज्याचे मुखि मधु
र वचन॥ तो विमान्य विस्याते॥ ३९॥ असो तुह्मा जाणा सावत्ति
काय बोलणे बहु सारु युक्ति॥ सांगितले तयाचि रिति॥ आज्ञा

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai

(6)

तवासक्र[illegible]मावा ५० हृदईधरुनिश्रीकृस्नमुर्ति स्मरणिअसा
वेअदेरात्रि त्रयोदशवर्षाचेअंति सिध्रनेटियतुसे ५१ ऐसे
सांगुनिकुरुनरेशा धौम्यगेलापांचाळदेशा धर्मेम्हणेविचार
किसा पुढाकरणेबंधुहो ५२ अज्ञातवासप्रग्रहवस्ति दु
टरनिर्वाहकवणेरिति पांचहिम्हणतिदयेअर्थि संकटकाळि
असेना ५३ धर्मम्हणेमियेत्रवीचव सभापंडितपांडवांचा
ज्ञातिब्राह्मणसहितेचा सयत्नासमजपासि ५४ रत्नपरि
क्षेमिकुशळ खेळोजाणेद्युतखेळ बुद्धियुक्तिकुशळ मजस
मानअसेना ५५ वस्तुपरिक्षाराजनिति समईजाणविचार

११५॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

युक्ति सहजघडलियासंगति जाणावेलस्वभावे ४६ बोधा
नियान्त्पाचेमन बुद्धिकं दुकाळकहिणा जिमह्मणेसुप्रसंन्न
मिहिकरिनमह्माते ४७ पाकवत्तीबहुवनामा धर्मघरि
सुपकर्मा नळनोयअमृतोपमा निपजविस्वहस्ते ४८
निमासंगतिनिर्दोष शा[illegible]कळाबळीम्यास तोहिदोषु
निसंतोष उपजविन[illegible] ४९ तैसेबोलताचमत्कार
अंगिकारिलराजेश्वर अर्जुनम्हणेवोविचार आमुचादि
परिसछो ५० वर्षयकउर्वशिगापु तोकरावयानिर्लेपु आ
[illegible]वगानिअंगणावपु राजयातेनेदणे ५१ नाटकशाळे

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

४

चियानारि॥ नाचवुजोपोकव्याकुसरि॥ सारथ्यविद्येचिहोपरि॥ अ
र्जुनसंगिल्याधरिलि॥५२॥ पार्थकुरीतासरसंधान॥ नेमनिश्चये
लक्षभेदन॥ दृष्टिपाटवी[illegible]लोन॥ त्यासीगुरुप्रसादे॥५३॥
रासिवदोनियागोष्टि॥ का[illegible]यानिकटि॥ नकुळलक्षणेमा
नीयेगोटि॥ शालिहोत्र[illegible]॥५४॥ अश्वनाचवणेनिगु
ति॥ फेरफिरवणेचक्राकृति॥ सि[illegible]पळवितावातगति॥ मंदऐ
सदावणे॥५५॥ वारुवाल[illegible]नि॥ तरनिजाणेसमुद्रजिवनि॥
तसिवाजदाउनिनयनि॥ नसवकरिनरायाचे॥५६॥ सहदेवल
णेमेसिघेनु॥ वृषभदमनिजतिसुजाणु॥ दोहनमथनिपरम

॥६॥

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(२४)

निपुणु ॥ शिष्य होये कळस्माचा ॥ ५७ ॥ कळस्मा म्हणे पामिसैरंध्रि ॥ पां
चाळि चिरि शिश्रूषा करि ॥ विराट नायो गुणसुंदरि ॥ आराधिनु सु
धेष्मा ॥ ५८ ॥ ऐसिया रहुनि [illegible]पाया ॥ दिवस कंठु धर्मराया ॥ मग
स्मरोनि श्रीकृष्णपाया ॥ सा[illegible] चालिले ॥ ५९ ॥ पुढे चाल
ता जगजेठि ॥ विराटनगर[illegible] पाठि ॥ स्मशान भूमिके निक
टि ॥ विशाळ वृक्ष शमिचा ॥ [illegible] अर्जुन म्हणे शस्त्रास्त्रे ॥ येथे दे
वा विसु पवित्रे ॥ अग्नि मंत्रिना महामंत्रे ॥ दृष्टि कोण्हा न पडति ॥ ६० ॥
खडतर मंत्रिबीजाचे रुप ॥ पाहाता शस्त्रे दिसति सर्प ॥ नयेषा
वोनिया कंप ॥ समिप कोण्हि न येति ॥ ६१ ॥ खड्ग वहि तुणीर चाप

Joint property of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(४)

प्रळयपावकाचिरूपे ॥ जेयपावोतियार्कपे ॥ स्पर्शोकोस्लिनरा
कति ॥ ६३ ॥ मृगाचर्मेवेष्टेनिनिगुति ॥ नकुळेटविलिहस्तावरुति
तेआणिकाचेहाति ॥ सोधननवेनिसवेथा ॥ ६४ ॥ हृदुस्त्रियेचेक
लवर ॥ तेथेबांधलेनयंकर ॥ [illegible]तवनारिनर ॥ समिपकोपिह
नयेति ॥ ६५ ॥ नगरप्रवेशे[illegible]भुबा ॥ दुर्गाप्रसाददेखिला
डोळा ॥ दुर्गोभगवतिविशाळ[illegible]टांगणिवंदिति ॥ ६६ ॥ धर्म
राजकरिस्तवन ॥ विश्वमा[illegible]नमन ॥ तुजवेगळेब्रह्मस्थ्या
न ॥ हेसर्वथाघडेना ॥ ६७ ॥ ब्रह्मा[illegible]कस्आणिश्रीहरि ॥ बाळ
केजन्मेलितुझाउदरि ॥ वर्तेतिआपुलेव्यापारि ॥ तुझियेआज्ञाजन

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(84)

निये ॥ ६८ ॥ तुम्हि आज्ञा अंगितां देख ॥ ब्रह्मा जाला चतुर्मुख ॥ लिंग
पतन त्रयंबका ॥ कपाळपाणि केला ॥ ६९ ॥ विष्णुसि देउनि बहु
सोंग ॥ बहुरूपे खेळसि अंगे ॥ लागता हे देवियामागे ॥ स्मशानवा
सि त्वा केला ॥ ७० ॥ करुनये तें कर्म करणे ॥ श्रेष्ठि वर्जिता राहाटणे
ते तुझि अवज्ञा जाणा ॥ वेद [illegible] निर्धारे ॥ ७१ ॥ तो आमुते घड
ला दोषु ॥ म्हणोनि नेणों अगण्य वासु ॥ आता उगउ निःकपादिव
सु ॥ निश्चानाशि अवर्दशा ॥ [illegible] जे जे व्यक्ता व्यक्त दिसे ॥ ते ते तुझे
स्वरूप असे ॥ तुम्ह नियंत्रके ऐसे ॥ विश्व सर्व चालिजे ॥ ७३ ॥ तारा तु
चि उक्ता गमि ॥ गौरि नगवति ऐसे वधर्मि ॥ वज्रादि विद्यानामि ॥ कौ
ळिका स्वाहि बोलिजे ॥ जे नम्यणाति पद्मावति ॥ त्रिपाद गायत्रि वेद

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(९)

नति ॥ सोख्यमतिभ्रकृति ॥ आदिशक्तिमापके ॥ ७५ ॥ तेआवतारध
रु निर्गोकुळि ॥ जन्मलीसिनंदकुळि ॥ कंसकुळाकरुनिदेवोळि ॥ चेद्य
मागधआठिले ॥ ७६ ॥ अकोनधर्ममुखिचिस्तुति ॥ प्रत्यक्षजालि
आदिशक्ति ॥ मोळस्पर्शोनि [illegible] ॥ आश्वासितसुवाचा ॥ ७७ ॥ वर्ष
येकवसिजेयेथे ॥ वैरिपाव[illegible]याले ॥ पुढे नागाल्मेदिनि
ते ॥ सागरांतयेकाद्गा ॥ ७८ ॥ [illegible]यदेउनिहाति ॥ लोचनाभा
गोचरनगवति ॥ पुढेराज[illegible]नि ॥ धर्मराजपातला ॥ ७९ ॥
वदोनियाआशिर्वचन ॥ म्यणोरायासर्वलोकत्याण ॥ नुपल्मेणको
ठिलकोण ॥ किमर्थयेणेयाठाया ॥ ८० ॥ दिसत्सिसुर्योहुनिसा

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

ज्येळा ॥ आगिं ऐश्वर्यो विकळा ॥ दृष्टि विद्यानुपाळा ॥ श्रेष्ठ अं
गनासंसि ॥ ८१ ॥ धर्मअनुतापे होसोन ॥ व्याघ्रपाद सांख्यजन न
अत्रि गो त्रि मि ब्राह्मण ॥ हो[illegible] मितधर्मोचा ॥ ८२ ॥ सनापंडि
त धर्मा निकट ॥ पांडव ज[illegible]न्य नष्ट ॥ तु धार्मिक परम श्रे
ष्ट ॥ ऐको मि आलो तुज पासि ॥ ८३ ॥ आरिवेद साहित्य शास्त्र ॥ प
रिश्रम असे आगम मंत्र ॥ [illegible] नाय त्रितंत्रि ॥ बुद्धि कुंठित
असेना ॥ ८४ ॥ खेळो जाणे द्युत खेळ ॥ रत्नपरिक्षेमि कुशळ ॥ अस
त्य नाषणि न सिवे वेळ ॥ कंकनाम मे पैमासे ॥ ८५ ॥ जाणाणे वस्तु वि
परिक्षा ॥ बहु काय बोलो विचारदक्षा ॥ राजा ह्मणे मज न्यपेक्षा

Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

तुमचेसंगतीचिबहुअसे ॥ ८६ ॥ असनवसनधनमान ॥ इळेसारि
खिनिवेदिन ॥ आनांस्वस्तकरुनिमन ॥ मजसंगतिअसावे ॥ ८७
अनुवादोनिभ्रहगोष्टि ॥ बैसविंनाभासनानिकटि ॥ पुढतिचो
जदेखेहष्टि ॥ सनास्खानिनें [illegible] ॥ कनकाचवळातुल्यसवळ ॥
हातिकवळिले प्रचंडमु [illegible] वखोवानिकटीमंडळ ॥ पोळि
कायंत्रशेनले ॥ ८९ ॥ जोह [illegible] नरेंद्रोतमा ॥ म्हणेमिबहुवस्तु
पकर्मी ॥ धर्मीधरिउत्तमो [illegible] देनोत्यनिपजवि ॥ ९० ॥ लहे
पहखाद्यचोष्य ॥ अंन्नेपरमान्नेपायसे ॥ शाकाकथीकाव्यासुवासे ॥
वेधलाविनवसंता ॥ ९१ ॥ निमसेनाचेसंगति ॥ बळात्मासम्बहात

10A

ति ॥ करिता महत्वाचियापंक्ति ॥ मान दिजे बळिष्टें ॥ ८३ ॥ आता दे
उनियापोटा ॥ घेई पाक क्रियेच्या कष्टा ॥ आणि कळिनेरें द्राग्रेष्ठ ॥
करणि दाविन पुढारि ॥ ८४ ॥ [illegible] यपळगा निराजे स्वर ॥ पाकक्रि
यच्या अधिकार ॥ देउनि ब[illegible]दर ॥ पाक शाळे स्थापिला ॥ ८५ ॥
चिर कंचुकि कर नुपणे ॥ क[illegible]क कर कंकणे ॥ चारु वेणि दिसां
जेने ॥ नेत्र कमळें शोभति ॥ [illegible] आवगानि अंगनावपु ॥ सजे पा
तला अर्जुन नृपु ॥ राजा[illegible]लावण्य दिपु ॥ कोणा कोठिल उजव
ळा ॥ ८६ ॥ नेणव पुरुष किंवा नारि ॥ प्रज्ञान समाये हृष्टिवरि ॥
स्त्रित्व लोपुनि बाळे रि ॥ पुरुष तेज विराजे ॥ ८७ ॥ म्हणोनि धर्मा

(11)

चियेघरि ॥ नाटकशाळे नाचवि नारि । गायनसिकवी रागोल्हारि ॥
गीतनृत्यसुताळे ॥ ८८ ॥ अर्जुन संगिबेसता रथि । बारवा गवि
आपुले हाति । युद्धि ना[illegible]ति ॥ सारथ्यक वाला धरि ॥
खांडवदाहादि अर्जुनयु[illegible]रिलि म्यां विविधे । पार्थगु
रुच्या प्रसादे ॥ संग्रामक[illegible]या ॥ १०० ॥ संगिअसता सम
ई समई ॥ कळो येईल बोलये[illegible] राजा संतोषोनि ह्रदई ॥ सर्वस्व
दाने वोळला ॥ १ ॥ तोषोनि[illegible]ति ॥ नाटकशाळे स्त्रिया नारि ॥
स्वाधिन करुनि ते अधिकारि ॥ बृहन्नळा टेविले ॥ २ ॥ प्रदोत चाबु
क धरुनि हाति ॥ नकुळ बोले राया प्रति ॥ असवसिक्षा करितासु

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com